कवित्तहृदय एवं कटाक्षशैली के श्री "सत्तनजी" से हुई सारगर्भित संवाद परिचर्चा का
यह संकलन एक स्मारिका के रूप में पुष्पांजलि भाव से समर्पित...

पुष्पेन्द्र पुष्प
| संपादक एवं प्रकाशक |

सत्तनगुरु उवाच..!

साक्षात्कारकर्ता : श्री एल.एन. उग्र
PRO - DGR NEWS NETWORK

*NewsPaper*NewsPortal*NewsChannel
दैनिक डिटेक्टिव ग्रुप रिपोर्ट
DGR Detective Group Report
सतर्क रहें-सजग रहें अभियान
www.dgr.co.in
www.detectivegroupreport.com
YouTube DETECTIVE GROUP REPORT

XFUNDZ™

FINSERV PVT. LTD.

BUILDS FINANCIAL FREEDOM

- EQUITY BROKING
- MUTUAL FUNDS
- REAL ESTATE
- INSURANCE
- FIXED DEPOSIT
- FINANCIAL PLANNING
- LOANS

DA, Barwani District

uti
UTI Mutual Fund

Chief Life Insurance Advisor

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

Bio Products - Distributor

Green Planet

WEALTH CLINIC

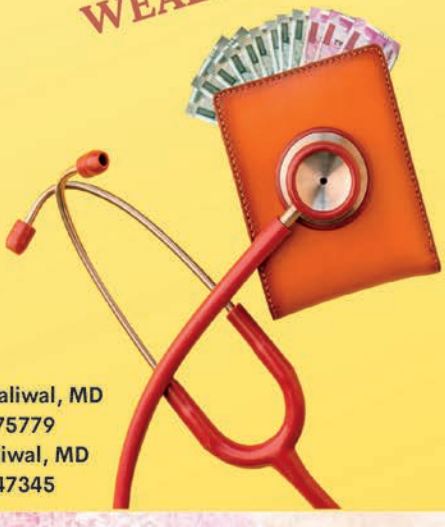

Mahendra Paliwal, MD
87708 75779
Aayush Paliwal, MD
90394 47345

सर्वजनहिताय के लिए हमारे शुभसंकल्पित उद्देश्य

'सतर्क रहे - सजग रहे अभियान'

को जन-गण-मन तक प्रसारित और पल्लवित करने में अपना योगदान दीजिये ।

हम विवाद के लिए नहीं अपितु संवाद के लिए संकल्पित है...!

हम सिर्फ लाभ के लिए नहीं अपितु शुभ के लिए भी संकल्पित है...!

हम सिर्फ समस्याओं को उजागर के लिए ही नहीं अपितु समाधान के साथ सहयोग के लिए भी संकल्पित है...!

'मित्रस्यम चक्षुक्षाम देहि' की भावना वाली हमारी संवाद और सहयोग की पत्रकारिता के साथ जुड़े।

Webportal :
https://www.detectivegroupreport.com
https://www.dgr.co.in

Youtube Channal :
http://www.youtube.com/c /DETECTIVEGROUPREPORT

Social Media :
Twitter
https://twitter.com/Detective_G_R

Facebook
https://www.facebook.com /DetectiveGroupReport

Instagram
https://www.instagram.com /detective_group_report

Email us : dgrnewsnetwork@gmail.com

स्नेही पाठकों,
सस्नेह वंदन !

''डिटेक्टिव ग्रुप रिपोर्ट'' का निरंतर यह प्रयास रहता है कि यथाशक्ति अपनी भूमिका का दायित्व निभा सके। इसी तारतम्य में आदरणीय **श्री सत्तनजी** से हुई परिचर्चा से उनके विचारों को जाना.. हमारे दैनिक में प्रकाशित किया उन प्रकाशित श्रृंखला को स्मारिका के रुप में जन-जन तक पहुंचाने का भाव था, अतः समाचार पत्र में प्रकाशित करते हुए अंततः स्मारिका स्वरुप में आप सभी के अवलोकनार्थ विमोचित की गई है ।

आदरणीय एवं हम सबके के प्रिय, कविपुंज **श्री सत्तन जी** के उक्त बेबाक, अर्थपूर्ण विचारों की इस स्मारिका का हमारी यथाशक्ति अनुरुप **सवा ग्यारह लाख प्रतियों** का प्रकाशन कर इंदौर - मध्यप्रदेश सहित भारतवर्ष के समस्त कवि-कला जगत, राजनीति, धर्मक्षेत्र, उद्योगपति, खेल, सामाजिक क्षेत्र से संबंधित अतिगणमान्य - विशिष्टों तक प्रेषित करने का भी मनोरथ है।

अधिकाधिक हाथों में स्मारिका पहुंचा सके यही हमारी ओर से पुष्पांजलि स्वरुप **"श्री सत्तन जी"** को भेंट है।

सद्उद्देश्यों एवं हमारे संकल्पसूत्र ''सतर्क रहे-सजग रहे-अभियान'' के रुप में हमारा चरैवैति-चरैवेति कदम बढ़ाते रहना ही हमारा लक्ष्य भी है...शनैः शनैः पथ तय करते हुए आज एक छोटे से पड़ाव के रुप में एक संकल्प आपके हाथों में है...।

आदर भाव सहित
पुष्पेन्द्र पुष्प
editor@dgr.co.in
Mo no. 9826044334

प्रमादरणीय सत्तन जी के साथ सम्पर्क ही सुखानुभूति का एहसास कराता है... वे वे ही हैं... उनसा दूसरा होने की तुलना... मुझे असहज होने जैसा लगता है... मन में एक विचार कौंधा क्यूं न "दादा" के स्पष्ट व सटीक विचारों को... पाठकों तथा आम व्यक्ति तक पहुंचाया जाए... इस संकल्प को पूर्णता का आकार देने हेतु.. "डिटेक्टिव ग्रुप रिपोर्ट" के माननीय संपादक श्री पुष्पेन्द्र पुष्प की सहमति ने... एक ऐतिहासिक दस्तावेज... को मूर्त रुप प्रदान करने की भूमिका निभाई... मेरे प्रयासों को सार्थक मंच मिला... प्रकाशित अंशों का संकलन एवं स्मारिका का स्वरुप... मेरे लिए... सुखद अनुभूति केवल नहीं है... यह अवसर सिर्फ प्रयासों से नहीं मिलता है.. सौभाग्यशाली होना भी अनिवार्य है...

समय के साथ एक ऐतिहासिक दस्तावेज आज.... आपके हाथ में है... दादा के विचारों का पठन-पाठन और उस पर आपका चिंतन... ही हम सभी के प्रयासों की सफलता है... आप सभी के कल्याण की मंगलकामना सहित...

शुभेच्छु
एल.एन. उग्र
पीआरओ-डिटेक्टिव ग्रुप रिपोर्ट

हमारे
समाचार पत्र
डिटेक्टिव ग्रुप रिपोर्ट
में समय-समय पर
प्रकाशित अंश..!

सवाल : आप राष्ट्रकवि के रूप में जाने जाते हैं, राष्ट्रीय स्तर पर साहित्य या कहें हिंदी की वास्तविक स्थिति क्या है ?

जवाब : राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की स्थिति बहुत मजबूत है, जो क्षेत्र हिंदी का विरोध करते हैं, वहीं पर हिंदी सुनी व बोली भी ज्यादा जाती है। दक्षिण भारत के जो इलाके हिंदी का विरोध करते हैं वहीं पर खूब हिंदी बोली जाती है। हिंदी के कवि सम्मेलन वहां पर आयोजित होते हैं। लता मंगेशकर को बहुत चाव से सुना जाता है, तो हिंदी का जो विरोध है वह केवल राजनीतिक विरोध है, व्यवहारिक विरोध नहीं है।

हिंदी का जो विरोध है वह केवल राजनीतिक विरोध है, व्यवहारिक विरोध नहीं है...

सवाल : आपने इंदौर में साहित्य का अलख जगाया है ,बीते दौर में और आज के दौर में आप क्या अंतर पाते हैं ?

जवाब : साहित्य का अलख जगाने के लिए एक दौर था। चाइना ने हिंदुस्तान पर आक्रमण किया भारत और चाइना के बीच में जब युद्ध हुआ तब इंदौर के लोगों ने, यहां के कवियों ने मिलकर श्री नगेंद्र आजाद जी के नेतृत्व में, शहर के चौराहे-चौराहे पर देश को जागृत करने के लिए कवि सम्मेलनों की श्रृंखला चलाई थी। डॉक्टर शिवमंगल सिंह सुमन जैसे कवियों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई थी। काव्य पाठ किया और प्रेरणा दी की देश की सुरक्षा के लिए भारत माता के कवियों और लेखकों को भी इस तरह से योगदान देकर भारत की जनता को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए जागृत करना चाहिए।

भारत माता के कवियों और लेखकों को भी इस तरह से योगदान देकर भारत की जनता को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए जागृत करना चाहिए...

सवाल : आप सत्य के प्रतिनिधि है सत्य बोलने से आपको किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है ?

जवाब : देखिए सच्चाई के लिए शास्त्रों में कहा गया है कि "सत्यम ब्रूयात"- "प्रियम ब्रूयात" सत्य बोलो प्रिय सत्य बोलो। सत्य सत्य बोला जाए या उसे इलेक्ट्रोपैड करके बोला जाए। लेकिन सत्य सत्य होता है, सत्य किसी के लिए हितकर तो किसी के लिए अहितकर भी हो जाता है। सत्य बोलने वाला अंतिम विजय प्राप्त करता है और अंतिम विजय को प्राप्त करने के पीछे जो धारणा है वह लोकोक्ति में भी है, "सत्यमेव जयते" उसको हम जीते हैं। जहां तक मेरा सत्य बोलने का सवाल है, मैंने राजनीति में बहुत नुकसान पाया है, अभी भी पा रहा हूं। क्योंकि सच्चाई सुनने के लिए राजनीति कभी भी तैयार नहीं होती है।

अपनी गलती स्वीकार करने के लिए भी राजनीतिक कभी तैयार नहीं होती है । सच्चाई यह है कि जिन लोगों के साथ जिन सहकर्मियों के साथ मुझे आचरण करते हुए राजनीति में रमण करना था, उन्हीं लोगों के मन में मेरे प्रति सहयोग की जो भावना होनी चाहिए थी, वह असहयोग की रही। मैं पदाभिलाषी नहीं हूं, मांगीलाल नहीं हूं, मांगना मेरी फितरत नहीं है।

सवालः इस परिप्रेक्ष्य में कोई ऐसी घटना घटित हुई हो तो कृपया बतावें ?

जवाब : सत्य बोलने का परिणाम यह मिला कि जब मैं विधायक था और विधायक होने के पश्चात में मैंने जब देखा कि अपना कार्यकाल आया है। तो अपने सत्य को निरुपित करने के लिए तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अर्जुन सिंह जी के पास गया और मैंने उनसे कहा इंदौर जैसे महानगर में जो कि मध्य प्रदेश का सर्वाधिक राजस्व देने वाला शहर है, ऐसे नगर में जिला चिकित्सालय नहीं है और जिला चिकित्सालय दिया जाए। उन्होंने कहा कि अगली पंचवर्षीय योजना में इस इस पर विचार कर लेंगे। मैंने उन से निवेदन किया अगली पंचवर्षीय योजना तक तो ना जाने कितने लोग बीमार हो जाएंगे, कितने लोग विदा हो जाएंगे। इसकी व्यवस्था के लिए यदि आप संकल्पवत होते हैं

शिवराज सिंह की तो जानकारी में भी नहीं होगा कि अस्पताल मैं लेकर आया हूं। जिस वक्त यह इंदौर जिला अस्पताल मैं स्वीकृत करा कर लाया उस समय शिवराज सिंह विद्यार्थी परिषद के एक कार्यकर्ता के रूप में थे...

तो बेहतर है अच्छा है। वह नहीं माने तब मैंने उन्हें अनशन का घोषणा पत्र उसी समय दे दिया। शहर में आकर आसन लगाकर बैठ गया अनशन पर, मल्हारगंज में टोरी कॉर्नर पर। नगर के सारे अखबारों ने मुझे सहयोग दिया, विभिन्न दलों के बुजुर्ग नेताओं ने मुझे सहयोग किया व आशीर्वाद दिया, कि बेटा तूने बहुत अच्छा विषय उठाया है। और तू इसमें सफल भी होगा। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ दिन बाद अर्जुन सिंह सरकार ने जिला चिकित्सालय का प्रस्ताव स्वीकृत किया और इंदौर को जिला चिकित्सालय मिला। मेरा दुर्भाग्य यह है कि मेरी सरकार, मेरे पार्टी की सरकार आने के बाद भी जिला चिकित्सालय के लिए व्यवस्था के लिए कोई भी कदम नहीं उठाए गए। अर्जुन सिंह सरकार ने मुझसे वादा किया था कि 300 बेड का यह अस्पताल होगा 100 बेड से इसकी शुरुआत होगी। मेरे पार्टी की सरकार द्वारा एक विधायक के द्वारा लाए हुए जिला चिकित्सालय की व्यवस्था किस तरीके से करती है यह देखना है। शिवराज सिंह की तो जानकारी में भी नहीं होगा कि अस्पताल मैं लेकर आया हूं। जिस वक्त इंदौर जिला अस्पताल मैं स्वीकृत करा कर लाया उस समय शिवराज सिंह विद्यार्थी परिषद के एक कार्यकर्ता के रुप में थे।

सवाल: आज के दौर में जो राजनीति है उसमें चाटुकारिता सफलता का मूल मंत्र हो गया है आप क्या कहेंगे ?

जवाब : देखिए चाटुकारिता एक ऐसा विषय है जो हर राजनीतिक दौर में मूल मंत्र रहा है। चाटुकार चमचे और मुसाहिब लोग इसका लाभ लेते रहे हैं। यह कोई नया काम नहीं है। सवाल सिर्फ इतना है कि उस जमाने में राजाओं की और बड़े-बड़े जिनके मातहत लोग हुआ करते थे उन लोगों की चापलूसी की जाती थी। आज हर शहर में प्रजातंत्र में इस चापलूसी का तेवर इतना अधिक बढ़ गया है कि अफसरों से लगाकर मंत्री तक, मुख्यमंत्री तक के चापलूसों की संख्या निरंतर वर्धमान है।

आज हर शहर में प्रजातंत्र में इस चापलूसी का तेवर इतना अधिक बढ़ गया है कि अफसरों से लगाकर मंत्री तक, मुख्यमंत्री तक के चापलूसों की संख्या निरंतर वर्धमान है...

सवाल : दल बदल की राजनीति पर क्या कहेंगे ?

जवाब : दलबदल जो है आदमी की पदलिप्सा का परिणाम है, अधिकांश स्थितियों में जो दलबदल होता है वह दलबदल पद की अभिलाषा के माध्यम से किया जाने वाला दलबदल है।जो लोग निष्ठावान होते हैं अपनी पार्टी अपने दल अपने संगठन के प्रति समर्पण का भाव होता है। और वह अपने संगठन को आगे बढ़ाने की भावना रखते हैं ,ऐसे लोग कभी दलबदल नहीं करते हैं। इसका एक उदाहरण मैं खुद हूं, मुझे अर्जुन सिंह जी से लगाकर अभी तक कई बार ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, लेकिन मैं दलबदल में विश्वास नहीं करता। जो लोग दलबदल करके आते हैं उनका एकमात्र भाव होता है कि

जिन लोगों से हमारे वैचारिक मतभेद हुआ करते थे वह एक दिन में कैसे परिवर्तित हो जाएंगे। दल-बदल करने से विचारधारा कैसे समाप्त हो जाएगी, यह सोचना काफी त्रासजनक है ..!

उनके अनुरुप उन्हें कोई पद मिल जाए। इसका अभी एकमात्र उदाहरण भारतीय जनता पार्टी में ज्योतिरादित्य सिंधिया का दलबदल कर समागम हुआ है, वे 27-28 जितने भी लोग आए थे उन सब को पद मिल गए और सारे के सारे सरकार बनाकर भारतीय जनता पार्टी में सरकार बनाने में कामयाब हुए।तो यदि दल बदल के माध्यम से सरकार बनाई जाती है तो वह प्रजातांत्रिक उद्देश्य और उसके लाक्षणिकता की पूर्ति नहीं करती है। वे अपने स्वार्थ की की पूर्ति करते हैं। जिन लोगों से हमारे वैचारिक मतभेद हुआ करते थे वह एक दिन में कैसे परिवर्तित हो जाएंगे। दल-बदल करने से विचारधारा कैसे समाप्त हो जाएगी, यह सोचना काफी त्रासजनक है ..!

सवाल : वर्तमान दौर में क्या होगा ?

जवाब : दल-बदल, इधर से उधर, उधर से इधर, एक दिन में इधर से उधर यह राजनीतिक लाभ के लिए होता है। अभी तो फिर दल बदल का मौसम आने वाला है, जैसे-जैसे चुनाव निकट आते जाएंगे वैसे वैसे इधर से उधर उधर से इधर लाभ के लिए पद अभिलाषी लोगों का सिलसिला चालू हो जाएगा।अपने सुख की तलाश करने के लिए लोग आएंगे वे दल बदलेंगे और कई लोग तो ऐसे भी मिलेंगे जो पद की लिप्सा में उधर से इधर आए थे लेकिन पद न मिलने के कारण फिर वापस उधर दल बदल कर चले जाएंगे। यह जो "आया राम गया राम" की राजनीति है, यह प्रजातंत्र को दूषित करने के लिए है। जैसे किसी तालाब में कई बार बढ़ आ जाए तो पानी गंदला होता है, उसमें जानवर कूदने लगते हैं, गंदगी फैलाते हैं..!

यह जो "आया राम गया राम" की राजनीति है, यह प्रजातंत्र को दूषित करने के लिए है...

सवाल : क्या आप के मतानुसार साहित्य में भी कोई गुटबाजी काम करती है ?

जवाब : देखिए मैं ऐसा मानता हूं कि साहित्य में कोई गुटबाजी नहीं है, हां लेकिन कवि सम्मेलनों में गुटबाजी काम करती है। साहित्य के सर्जन में गुटबाजी क्या करेगी। जो साहित्यकार है वह सोचता है समझता है जो दिखता है वह लिखता है, जो वह अनुभव करता है उसकी अभिव्यक्ति करता है, तो साहित्य में कोई गुटबाजी नहीं होती। प्रतिवाद हो सकते हैं और उनको साहित्य की गतिविधि के हिसाब से विभाजित भी किया जा सकता है।

सवाल : राजनीति में शॉर्टकट पर आप क्या टिप्पणी करेंगे ?

जवाब : राजनीति में शॉर्टकट संगठन पैदा करता है, वैसे ही होता है जैसे इंदौर में अभी मेयर उतरकर आया, कैसे आया यह क्यों आया अब यह विवाद की वस्तु नहीं है। संगठन के अपने-अपने कोष्ठ- प्रकोष्ठ हैं। योग्यता की दृष्टि किसी विशेष व्यक्ति को ढूंढकर उस काम के लिए रख दिया। शॉर्टकट कहोगे या कुछ और क्योंकि वह आदमी राजनीति में कभी उठकर खड़ा नहीं हुआ। राजनीति में जब से मोदी सरकार आई है तब से भारतीय जनता पार्टी के पुरातन कार्यकर्ता अपने आप को ठगा हुआ महसूस करते हैं। जब से मोदी ने इसकी कमान संभाली है शाह ने अपनी कमान संभाली है, कुल मिलाकर के भारतीय जनता दल के मेंबरों के साथ जो अन्याय अत्याचार हुआ है, आयु सीमा का

राजनीति में जब से मोदी सरकार आई है तब से भारतीय जनता पार्टी के पुरातन कार्यकर्ता अपने आप को ठगा हुआ महसूस करते हैं...

निर्धारण करने के बाद। यह जो नई पीढ़ी के हाथों में सरकार गई है इसके परिणाम आगे देखने को मिलेंगे। लेकिन उसका मूलभूत उदाहरण आडवाणी जी और मुरली मनोहर जोशी जी हैं, जिनको इन्होंने आते ही एक तरफ करके फेंक दिया। इस भाव भूमि के अनुसार लगता है कि जैसे बुजुर्गों की किसी भी सलाह को स्वीकार करने के लिए यह लोग तैयार नहीं है। उन लोगों की बातों को सुनना और समझना चाहते हैं जो इनके अनुसार हो। उम्र का जो 70 साल तक है वह राजनीति कर सकेगा मोदी जी 72-73 के हो गए हैं, अब 75 की उम्र का सिद्धांत लाएंगे तो मोदी जी जब इस उम्र के हो जाएंगे तो क्या हट जाएंगे? तो कहीं-कहीं अपना किया हुआ भी अपने सामने आ जाता है। जो अच्छा होता है उसको लोग सर पर लेंगे बुराई जो है उसकी निंदा भी करेंगे मोदी का जो अच्छा है वह अच्छा है। कुछ है जो मोदी से पहले किसी ने नहीं किया मोदी ने करके दिखाएं। राजनीति का अपना तेवर है। उसकी सराहना भी करेंगे।

सवालः वर्तमान दौर की राजनीति में आप सबसे पुराने चेहरे हैं, और सब से वरिष्ठ हैं, फिर भी आप मुख्यधारा में क्यों नहीं हैं ?

जवाब : जैसा कि मैंने कहा है अभी आयु सीमा बताकर पीछे धकेल दिया गया ! मैं भारतीय जनता पार्टी का एक निष्ठावान कार्यकर्ता बन कार्य करता हूं, पार्टी ने निर्णय ले लिया मैं चुपचाप हूं, अब नए लड़कों के पास में जाकर के खड़ा होकर के उनसे प्रेरणा तो नहीं ले सकता ! और सच्चाई है तो पार्टी कोई कार्यक्रम देती है तो उसमें अपने कार्य पर लग जाता हूं। रहा प्रश्न इस बात का कि राजनीति में जहां जब हम आचरण करने के लिए आते हैं, नई पीढ़ी को प्रोत्साहित करना पड़ता है, जब तक नई पीढ़ी नहीं आएगी, नई हवाएं नहीं आएगी, तो बात बनेगी नहीं, यहां पर किसी को तकलीफ होगी तो किसी को सुख भी मिलेगा।

वोट देने में उम्र का कोई बंधन नहीं है, तो पार्टी उम्र का बंधन लगाकर आचरण करने की प्रेरणा देती है। वह कहीं ना कहीं प्रजातांत्रिक मूल्यों का अपरहण भी करती है...

लेकिन किसी की तकलीफ और किसी को सुख को उम्र के दायरे में नहीं बांधा जा सकता। एक आदमी को प्रजातंत्र में एक वोट देने का अधिकार दिया है, एक चुनाव लड़ने का अधिकार भी है, वोट देने में उम्र का कोई बंधन नहीं है, तो पार्टी उम्र का बंधन लगाकर आचरण करने की प्रेरणा देती है। वह कहीं ना कहीं प्रजातांत्रिक मूल्यों का अपरहण भी करती है। भारतीय जनता पार्टी ने अपने संगठन में इस कार्य को किया है की पार्टी के सामने आयु की सीमा रख दी !

सवाल : आप ब्राह्मण पक्ष के बड़े पक्षधर हैं, क्या ब्राह्मणों का हित-संरक्षण ठीक से हो रहा है ?

जवाब : राष्ट्रीय ब्राह्मणों को जितनी गालियां आज दी जा रही है, आज के जमाने में और आज के युग में, और इतनी गालियां किसी को नहीं दी जाती और वह एक वर्ग विशेष के द्वारा गाली दी जा रही है! आरोप लगाए जा रहे हैं! ब्राह्मणों को गाली और आरोप लगाने वाले यह बात भूल जाते हैं कि मार्गदर्शन, देशनीति और नियम सिखाने का काम जिन लोगों ने किया है वह ब्राह्मण ही थे। यह भी सत्य है कि पिछले समय में पिछड़े वर्ग के लोगों के साथ हमारे बुजुर्गों ने जो व्यवहार किए वह उचित नहीं थे, इसमें सभी शामिल है ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ने चतुर्थ वर्ण के साथ जो अन्याय किया, अत्याचार किया ,उन सब का जिम्मेदार वह मानते हैं ब्राह्मण को ! क्योंकि ब्राह्मण वर्ण व्यवस्था में सबसे पहले सर्वोपरि माना जाता है,पहला नाम आता है फिर क्षत्रिय और फिर वैश्य आते हैं और फिर चतुर्थ चरण आता है। ऐसी स्थिति में चतुर्थ चरण के साथ जो भी आचरण किया गया है, इस देश में आचरण के परिणाम स्वरुप सबके हथियारों की नोक सब का एंगल अगर है तो वह ब्राहमण के खिलाफ है।

मार्गदर्शन, देशनीति और नियम सिखाने का काम जिन लोगों ने किया है वह ब्राह्मण ही थे...

DETECTIVE GROUP

Detecting the truth

I AM NOT

- a Lover but will support you.
- a Friend but will guide you.
- a Lawyer but will assist you in getting justice.
- a Police but will help you in finding an evidences.
- an Uncle but will help in knowing your upcoming family's details.
- a Teacher but will suggest you a right direction.
- a Doctor but will cure your problems.
- a Driver but will take you to correct destination.

WHO AM I?

I AM THE DETECTIVE !

Helping Secretly & Securely...

WWW.DETECTIVEGROUP.IN

DETECTIVE GROUP
Detecting the truth

क्या किसी के बारे में कुछ जानना चाहते है

कब..क्यो..कहाँ..कितना..कैसे..

पूर्ण गोपनीयता..पूर्ण विश्वसनीयत

WWW.DETECTIVEGROUP.IN | +91-91110 50101

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक - पुष्पेंद्र पुष्प द्वारा 406- इंडस्ट्री हाउस 15 ए.बी. रोड, ओल्ड पलासिया, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

■ आर.एन.आई. नंबर MPBIL/2015/66535 ■ डाक पंजीयन : एमपी/आईडीसी/1600/2023-2025 ■ *प्रधान संपादक - पुष्पेन्द्र पुष्प

Website : www.dgr.co.in | www.detectivegroupreport.com

Email : detectivegroupreport@gmail.com, Contact no. : 9111156060,9826044334

विशेष सूचना : सतन गुरु उवाच स्मारिका में प्रकाशित सामग्री/अंशों को अन्यत्र प्रयोग करना वर्जित है। अनुमति आवश्यक है, अन्यथा कानूनी कार्यवाही की जावेगी। सर्वाधिकार सुरक्षित © डिटेक्टिव ग्रुप रिपोर्ट